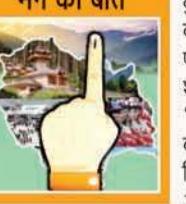




प्रिय पाठकों के लिए

वोट के लिए आपके मन की बात



अपने मताधिकार का प्रयोग करते समय चुने जाने वाले चुम्हाई और नई सरकार से उपयोगिता है। इस महापूर्व में पहली जून को वोटिंग होने वाली है। युवा, महिलाएं, व्यापारी, पेशेवर, नौकरशाह, मजदूर और उद्योगीतयों सहित अब मतदाता दिया जाएगा।

आप अपनी राय हमें ई-मेल : editoranantgyaan@gmail.com पर भेज सकते हैं।

यदि आप व्यक्तिगत रूप से अपने विचार देना चाहते हैं तो कांगड़ाप्रेषण नंबर: 8894521702 पर भी भेज सकते हैं।

चुनावी टक्की

हेलमेट पर कोई ऐतराज नहीं



हेलमेट पहनना चाहिए और जनहित में बांटना भी चाहिए। इसके कई फायदे भी हैं। एक हेलमेट में कोई आसानी से पहचान भी नहीं सकता है। चुनावों में ही किसी को हेलमेट पिस्ट में हो तो बुरी बार जानी हो सकती है। चुनावी और व्यापारी लोकों ने आपको हेलमेट पर कोई विचार नहीं दिया। लोकों ने आपको और आपको विचार की चिंता की है। हेलमेट देने का खालीएकदम तो मन में आया नहीं होगा। अब योका और माहौल भी होना चाहिए। पिस्ट में मिली कोई भी खुले ही कोई मूर्छा की हो तो मामने नहीं रखती, उसके पीछे सोचते ही बहुत अच्छी है। हेलमेट अपाको चुनाव से चुनाव की हाँ बदल देता है। इसके लिए हेलमेट का पिस्ट में मिलना गलत नहीं है। यैकी ताक जो जरूर रहता है। लोकों के लिए हेलमेट नहीं दिया जाना चाहिए। अब चुनावी रीढ़ीयों में बाइक रैनी भी ही होती है, लोकों ने उसको नैया पार लग जाएगा।

-राजेश शर्मा

पूरी दाल ही काली ही

वाह रजनीती का यह बया दौर आया है। अपनी ही पार्टी के नेताओं से पार्टी के प्रत्याशी दूर भाग रहे हैं। कुछ नेता प्रलाशियों से दूर भाग रहे हैं। भागने के पैठे बहज हमें समझ नहीं आ रही है, लेकिन जनता यूवा समय रहे हैं। किसी को प्रत्याशी पसंद नहीं आ रही है, लेकिन जनता यूवा अपने भागने के लिए चुनाव प्रचार करने के लिए हेलमेट का पिस्ट में मिलना गलत नहीं है। यैकी ताक जो जरूर रहता है। लोकों के लिए हेलमेट नहीं दिया जाना चाहिए। अब चुनावी रीढ़ीयों में बाइक रैनी भी ही होती है, लोकों ने उसको नैया पार लग जाएगा।

योगी दाल ही होती है, चरित्र की भी और चेहरों की भी। योगी दाल जो पक रही है, उसके लिए भी शिशा दी जानी चाहिए। अब हेलमेट ताज नहीं दें या रहे हैं तो दूसरे के लिए काम पर क्यों सवाल उठ रहे हैं। ताक बोले ही होते हैं कि ये हेलमेट जनहित वाले नहीं थे, लोकों नक्की कैम सुनेगा।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही। सियासी दाल जो पक रही है, इसका रंग किसी को समझ नहीं आ रहा है। अब जब दाल पक चुकी होगी तो बदल में ही पता चलेगा कि किसका संभव प्रभावी रहा है। यैकी ताक कहते हैं कि सियासी दाल सब जाह पक रही है। इसमें सबका स्वर्ण भी पक रहा है। एक कोट सीएम को एक बोट पीएम वाले ही होते दाल पक रहा है।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

अब रंग बदलने के खेल में जेडिमा तो रहेगा ही।

</div

अपरा एकादशी का व्रत करने से प्राप्त होती है अपार धन संपदा

अपरा एकादशी का व्रत ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को किया जाता है। इस बार इस एकादशी का 2 जून को समार्थ और 3 जून को वैष्णव व्रत करें। इस व्रत को करने से व्यक्ति को अपार धन संपदा प्राप्त होती है। अपरा एकादशी के प्रभाव से बुरे कर्मों से छुटकारा मिलता है। इसके करने की कर्तिं, पुण्य तथा धन में वृद्धि होती है।

पुराणों में कहा गया है कि जिस प्रकार मनुष्य को कर्तिं का व्रत करने से व्यक्ति को अपार धन मिलता है, वैसा ही फल अपरा एकादशी के व्रत करने से व्यक्ति को अपार धन मिलता है। अपरा एकादशी का व्रत पाप रूपी अंधकार के लिए सूर्य के प्रकाश के समान है।

अपरा एकादशी की व्रत कथा

शास्त्रों में अपरा एकादशी की व्रत कथा में महिंजन नामक एक धर्मात्मा राजा था उसका छोटा भाई बज्ज्वल बहुत ही खूब, अधर्मी तथा अन्यायी व्यक्ति था। वह अपने बड़े भाई से बड़ा द्वेष खत्ता था और वह स्वयंपात्र से अवसरावी थी। एक गोत्र उसके अपने बड़े भाई को हत्या कर दी और उसकी देह को पीपल के वृक्ष के नीचे ले आ देता है। मृत्यु के उपरान्त वह पीपल के वृक्ष पर उत्पात करने लगा। इस कारण वहां रहने वाले सभी लोग भयभीत होते हैं। अकस्मात् एक दिन धौम्य नामक ऋषि उत्तर से गुजरते हैं, जब उन्हें इस व्रत का वोष देखता है, तो वह अपने तोपताल से उस आसा को पीपल के घेंडे से नीचे उतारते हैं। और उसे विद्या का उद्देश देते हैं। प्रतेमाला को मृत्यु के लिए अपरा एकादशी व्रत करने का मार्ग दिखाते हैं। इस प्रकार इस व्रत को करने से उसे प्रते योगी से मृत्यु मिल जाती है और मोक्ष प्राप्त होता है।



बड़ा मंगल आज, इस विधि से करें हनुमान जी की पूजा

ज्येष्ठ माह में पड़ने वाले मंगलवार बड़ा मंगल कहा जाता है। इस साल का पहला बड़ा मंगल 28 मई यानी आज है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, इसी दिन भगवान श्रीराम और हनुमान जी की पहली बार भेंट हुई थी, जिसके बाले इसे बुद्धा मंगल के नाम से भी जाता है। ज्योतिष शास्त्र में इस दिन की बड़ी महिमा है। ऐसी मान्यता है कि बड़े मंगल पर हनुमान जी की पूजा करने से दुर्घट तकलीफ दूर होती है। साथ ही सभी इच्छाओं की पूर्ती होती है।

पूजा सामग्री

बड़े मंगल पर हनुमान जी की पूजा करने के लिए काफी कुछ चीजों की आवश्यकता होती है। कई बार पूजा के दौरान हम उन चीजों को अनदेखा कर देते हैं और भूल जाते हैं। इसलिए यहां दो गई सामग्री जल्दी से नोट कर लें, जो इस प्रकार हैं - हनुमान जी की प्रतिमा, रामदरबार की प्रतिमा,

गंगाजल, दूध, धी, शहद, लाल रंग का कपड़ा, लाल चौला, तुलसी की माला, गुलाब के फूल, चरण पादुका, धूप, दीप, चंदन, बाती, पीतल का दीपक, चमेली का तेल, पान का पत्ता, सुपारी, अक्षत, सिंदूर, मिठाई, शुद्ध जल, हवन सामग्री, हनुमान चालीसा की पुस्तक, कपूर और लड्डू आदि।

घर लाएं यह चीजें

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, इस दिन अपने घर पर केसर जरूर लाएं। भगवान हनुमान को केसर अति प्रिय है। ऐसा कहा जाता है कि इस दिन जो लोग अपने घर के सर्से के नाम लाते हैं उन्हें सुख-समृद्धि का आशीर्वाद प्राप्त होता है। इसके साथ ही उनके जीवन से धन की समस्या समाप्त होती है।

पति रूप में आए विष्णु को तुलसी ने दिया श्राप

शंखचूड़ के व्रथ का समाचार जान पति रूप में आए विष्णु पर तुलसी बहुत क्रोधित हुई और पूछा - तू कौन है ? तूने छलपूर्वक मेरा सतीत्व नष्ट कर दिया है। अतः मैं तुझे श्राप देती हूँ कि तुम परथर सद्गुर कठोर हृदय रखने वाला परथर हो जा। तब भगवान विष्णु अपने रूप में प्रकट हो गए। सनकुमार जी बोले - हे व्यास जी इस प्रकार श्राप देने के बाद सतीत्व नष्ट हो जाने के कारण तुलसी गूलनिवास फूट-फूटकर रोने लगा। उसी समय भक्तवत्सल भगवान शिव प्रकट हो गए और बोले - हे तुलसी ! तुमने जिस हेतु तपत्यका की थी उसी के अनुरूप तुम्हें फल प्राप्त हुआ। अतः तुम दुखी मत हो एवं अपना शरीर छोड़ दिव्य देह धारण कर बैंकुंठ में लक्ष्मी के समान विष्णुप्रिया हो। तुम्हारा मृत शरीर पृथ्वी लोक में नदी के रूप में हो जाएगा और गंडसी के सामने प्रसिद्ध होगा। मेरे वर के प्रभाव से कुछ दिनोंपरांत तुलसी देवी - पूजन में सर्वथरथ प्रयुक्त होगी। इस प्रकार वरदान देकर शिवजी अंतर्धान हो गए। विष्णु उस साथ ले बैंकुंठ चले गए। पार्थिव शरीर से गंडकी नदी प्रवाहित हो गई।



सफलता पाता है आश्लेषा नक्षत्र में जन्मा जातक

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मा जातक प्रत्येक कार्य में सफल होता है। यह प्रथम जातक स्वार्थी किसके भी कर्त्तव्य राशि के अंतर्गत आता है। इसके चरणानुसार नाम डी, डू, डे, डो हैं। इस नक्षत्र का स्वामी चंद्र वृद्ध है। इन नक्षत्र में जन्म लेने वालों को वृद्ध व चंद्र का प्रभाव पड़ता है। बृद्ध जान का कारक है। यह वर्णिक ग्रह भी माना गया है। इसे प्रत्येक कार्य में योग्य होने वाला पंचक व्रत करना अशुभ माना गया है। इनसे नुकसान हो सकता है।



निकालने में माहिर होते हैं। बृद्ध प्रथम जातक स्वार्थी किसके भी हो सकते हैं। यह नपुंसक ग्रह होने से दूसरे ग्रहों के साथ हो तो उत्तम फलदायक होते हैं। सिंह राशि पर स्वर्तन तोकर केंद्र में हो तो भी यह सुख फलदायक होते हैं। बृद्ध जिस राशि में होगा उपका भी प्रभाव जातक के जीवन पर पड़ेगा। मेरे लगाने हो राशि सुख चतुर्थ भाव में होगा। उसका स्वामी चंद्र सुख का दाता होगा। बृद्ध यदि दसम भाव में हो तो सफल व्यापारी, तृतीय भाव में हो तो पराक्रम द्वारा लाभ पाने वाला, नाना-मामा से भी लाभ मिलेगा। इस लग्न में नक्षत्र स्वामी बृद्ध की इस्थिति, लग्न वृद्ध भाव में उत्तम कला में निपुण होते हैं। ऐसे जातक बोलने में चतुर, चालाक, काम

जयसिंहपुर बाजार की मजार है हिंदू-मुस्लिम एकता की प्रतीक

आज जहां भारतवर्ष हिंदू मुस्लिम के लिए संघर्ष कर रहा है वहां हिमाचल के अनेक धार्मिक स्थल ऐसे भी हैं जो हिंदू मुसलमान एकता के प्रतीक बने हुए हैं। कांगड़ा जिले के जयसिंहपुर उमंडल के बाजार में एक बाबा सह मस्त अंती की मजार है जिसकी देखरेख विद्युत करते हैं जो हिंदू मुस्लिम में आपसी सद्भावना के प्रतीक है और सभी धर्म की इज्जत करना सिखाते हैं। सदियों से इस मजार में पूजा हिंदू लोग ही करते हैं। हर बीचार को यहां बहुत भीड़ रहती है। बाजार के ठीक सामने नीलकंठ महादेव जी का प्राचीन मंदिर है जहां सावन के हर सोमवार को शिव जी को जल चढ़ाने वाले श्रद्धालु भी इस मजार पर जल चढ़ाना नहीं भूलते हैं। लोगों की आस्था है कि मजार में सच्चे दिल से जाने वाले हर आदमी की मनोकामना पूरी होती है। मजार में हर वर्ष विशाल भंडारे का आयोजन ही किया जाता है। मजार में जिन लोगों की मनोकामना पूरी होती है वे बीचार को मजार के चादर चढ़ाकर अपनी आस्था पूरी करते हैं। यहां सभी लोगों की आयोजन किया जा रहा है। मजार में जिन लोगों की मनोकामना पूरी होती है वे बीचार को मजार के चादर चढ़ाकर अपनी आस्था पूरी करते हैं।

-प्रवीन मिश्रा, लंबांग

करसोग में भगवान परशुराम ने बनाया था कामाक्षा देवी का मंदिर

लकड़ी तराशी का कार्य अद्भुत

कामाक्षा देवी का यह सुंदर मंदिर काव गांव में सड़क के बाएं ओर थोड़ा ऊंचे आधार पर बनाया गया है, जिसको 8-10 परथर की ओंकार चांडी और चांदी के थामों पर वर्ष अंतम लगाया गया है। मंदिर में कुल मिलाकर चार अलग-अलग आकार आदि विवरण देखते हैं। मंडी जिले के करसोग उपमंडल के ममेल से लगभग 10 किलोमीटर आगे काव गांव में सड़क की देखी कामाक्षा देवी का मंदिर देखते हैं। इसके देखी की छोटी देखी जा सकती है। एक दूजे पर ढलावं स्टेप की तरह हैं। दूसरे वाली दूसरे वाली छोटे देखी की देखी जा सकती है। बरामद की है जो कि एक दूजे पर ढलावं स्टेप की तरह है। दूसरे वाली दूसरे वाली स्टेप वाली छोटे देखी की देखी जा सकती है। बरामद की है जो कि एक दूजे पर ढलावं स्टेप की तरह है। दूसरे वाली दूसरे वाली स्टेप वाली छोटे देखी की देखी जा सकती है। बरामद की है जो कि एक दूजे पर ढलावं स्टेप की तरह है। दूसरे वाली दूसरे वाली स्टेप वाली छोटे देखी की देखी जा सकती है। बरामद की है जो कि एक दूजे पर ढलावं स्टेप की तरह है। दूसरे वाली दूसरे वाली स्टेप वाली छोटे देखी की देखी जा सकती है। बर

विज्ञान मानवता के लिए एक खूबसूरत तोहफा है, हमें इसे बिगड़ा नहीं चाहिए। -एपीजे अब्दुल कलाम



भीड़ के लिए नहीं बने पहाड़

हि

मालय की गोद में बसे उत्तराखण्ड की चारधाम यात्रा के शुरूआत में ही श्रद्धालुओं की अप्रत्याशित भीड़ उमड़ रही है। इस साल 70 लाख के करीब तीर्थयात्रियों के चारधाम की कल्पना भी नहीं की जाती थी। पिछले साल ब्रदीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री पहुंचने वाले यात्रियों की संख्या 56,31,224 थी, जबकि राज्य गणन के वर्ष 2000 में इन चारों धर्मों के कुल 12,92,411 यात्री ही पहुंचे थे। दो दशक में यात्रियों में सात गुना बढ़ी थांत रहने वाले पहाड़ों को अशांत कर सकती है। यात्रियों के साथ ही हावनों की संख्या भी अत्यधिक वृद्धि हो रही है। इन सारे तीर्थयात्रियों के आने से व्यवसायियों का गणवाद होना स्वाभाविक है, लेकिन पर्यावरण और अपदान प्रबंधन से जड़े लोगों को आस्था के अप्रत्याशित ज्ञान ने चिंता में डाल दिया है। पर्यावरणविदों का कहना है कि पहाड़ भीड़ के लिए नहीं बने हैं। यात्रियों की अत्यधिक भीड़ यहाँ कई प्रकार की समस्याएँ पैदा कर रही हैं। पहाड़ों पर मानव द्वारा करार फैलता जा रहा है। चारधाम मार्मों में गंगरी भी खुब फैल रही है। इन मार्मों पर जो मलजल शोथन संयंत्र (एसटीटी) लागत है, उनकी क्षमता भीड़ के मुकाबले बहुत कम है, तरीजन नदियों में मिलकर उन्हें ढूपित कर रही है। इन सारे तीर्थयात्रियों के आने से व्यवसायियों का गणवाद होना स्वाभाविक है, लेकिन पर्यावरण और अपदान प्रबंधन से जड़े लोगों को आस्था के अप्रत्याशित ज्ञान ने चिंता में डाल दिया है। पर्यावरणविदों का कहना है कि पहाड़ भीड़ के लिए नहीं बने हैं। यात्रियों की साथ ही हावनों की संख्या भी अत्यधिक वृद्धि के लिए नहीं बने हैं। पिछले वर्ष वर्ष द्विनिया में लगातार लगातार होते हुए पूरी दुनिया ने सोशल मीडिया पर देखा था। यह यात्रा नवंवर तक चलनी है। अप्री 10 दिन की यात्रा में ही 6.43 लाख यात्री और 60,416 बाहन चारों तीर्थों तक पहुंच चुके हैं।

सबसे अधिक चिंता का विषय वाहनों का पहाड़ों पर चढ़ना है। इस चिंता का सबसे बड़ा कारण डील वाहन है, जिसने ज्यादा प्रदूषण होता है। पहले यात्री पैदल ही चारों तारों की यात्रा करते हैं, लेकिन अंतकल सड़क मार्मों की सुखिली होने से यात्री अपने वाहनों में इन तीर्थ स्थलों पर पहुंच रहे हैं। इनकी बजह से पहाड़ों में वायु प्रदूषण का स्तर निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। पर्यावरणविदों के लिए एक और चिंता का विषय ब्लैक कार्बन है, जो जलवाया परिवर्तन में योगदान के साथ ही ग्लोशियरों को भी पिछला रहा है। ऑटोमोबाइल द्वारा उत्तर्जित लैके कार्बन बर्फ और बफ की सतहों पर जाम हो सकता है। गर्हे रंग के कण हल्कों सतहों की तुलना में अधिक सुर्य प्रकाश को अवशोषित करते हैं, जिससे ग्लोशियरों की पिछलने की गति तेज हो जाती है। इस साल आपी 10 दिन में ही बड़ी ब्रदीनाथ में 12,263 और गंगोत्री में 10,229 वाहन पहुंच गए। ये दोनों ही धार्म गंगोत्री और सतोपंथ न्योशियर समूहों के क्षेत्र में हैं, जो कि तेजी से पिछले हो रही है। इनका तेज गति से पिछलना अंतर्राष्ट्रीय चिंता का विषय भी बना हुआ है। दोनों ही न्योशियर समूह गंगा की सुखिली धारा अलकनंदा व भागीरथी के उद्धम स्थोत्र हैं। यमुना का स्तोत्र यमुनोत्री ग्लोशियर है। इसी साल अप्रैल में जारी इसरो की पिरेट के अनुसन्धान, हिमालयी ग्लोशियरों के तेजी से पिछलने के साथ ही न्योशियर झीलों की संख्या और आकार में निरंतर बढ़ती ही जा रही है, जो आपदाओं की दृष्टि से एक और चिंता का विषय बन रही है। इनको के अनुसन्धान के अन्तर्गत, यमुनोत्री ग्लोशियर के उद्धम घटनाकाल में जारी रही है, जो कि इनके अस्तित्व के लिए खतरनाक हो सकता है। इनका अपनी आस्था और महत्वांकों के चलते प्रकृति से खिलावड़ कर रहा है। शांत रहने वाले पहाड़ों को विचित्रित कर रहा है, जिसके नीतीजे काफी गंभीर हो सकते हैं। ■

आज के दिन की प्रमुख हस्ती

पदमश्री से सम्मानित



एनटी रामाराव
जन्म: 28 मई, 1923
मृत्यु: 18 जनवरी, 1996

एनटी रामाराव का जन्म मद्रास के कृष्ण जिले के एक छोटे से गांव निम्माकुरु में हुआ था। एनटी रामाराव या नंदमूरि तारक रामाराव तेलुगु फिल्मों के प्रसिद्ध अभिनेता, निर्देशक और निर्माता थे। वह अभिनेता के साथ ही एक अच्छे राजनेता भी थे। एनटीआर के उपनाम से प्रसिद्ध रामाराव ने तेलुगु देशम पार्टी की स्थापना की और आंत्रंग प्रदर्श के मुख्यमंत्री भी रहे। राजनीति में अपने से पहले वह तेलुगु फिल्मों के प्रसिद्ध अभिनेता थे। उन्होंने हिंदू देवताओं जैसे कृष्ण और राम के जीवन से संबंधित बहु-सी फिल्मों में काम किया और दर्शकों के चहेतून बने। भारतीय सिनेमा में उनके योगदान को देखते हुए उन्हें भारत सरकार ने 1968 में पदमश्री से सम्मानित किया। एनटी रामाराव ने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत 1949 में 'मना देसम' नामक तेलुगु फिल्म से की थी। इसके बाद बीप्रे एवं योगदान को देखते हुए उन्हें भारत सरकार ने 1988 में एनटीआर नेशनल अवॉर्ड दिया जाता है। उनके नाम पर एनटीआर नेशनल अवॉर्ड दिया जाता है। ■

एनटी रामाराव

जन्म: 28 मई, 1923

मृत्यु: 18 जनवरी, 1996

न्यूज ब्रीफ

टेलीकॉम घोटाले के 49,000 संदिग्ध म्यांमार से चीन प्रत्यर्पित
बींज़िंग। म्यांमार ने जुलाई 2023 से अब तक दूसरी ओर इंटरेक्ट थोरोथाई के 49,000 से अधिक आपराधिक संदिग्धों को चीन की दिवसात में सौंपा है। चीन के सार्वानुकूल सुरक्षा मंत्रालय ने एक सांबद्धता समझौते में कहा कि थोरोथाई से तुड़े कई कुख्यत आपराधिक समूहों को करारा झटका दिया गया है और कई प्रमुख आपराधिक संदिग्धों को गिरफ्तार किया गया है।



हाईकोर्ट ने रामलीला के लिए मैदानों की बुकिंग पर लगाई रोक
दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीटीए) के मैदानों पर प्रभाव वाले रामलीला समझौतों के लिए बुकिंग पर रोक लगा दी है। यह रोक तब तक जारी रहेगी, जब तक कि प्राधिकरण नई भारक रामलीला प्रक्रिया (एसपीओ) या दिवसिर्विषयक बच्ची बनाना आयोगीपूर्ण तारीख तक सिर्विक्स शुरू की जाएगी। यह रोक करने का विदेश दिया गया है। उदाहरण का निर्देश डीटीए को वार्षिक व्यापार तैयार होने के बाद प्रचारित करने के कहाना है। उदाहरण में तो यह बार 76,000 का अंकड़ा छुआ और 76,009 का नया आ॒ल टाइम हाई बनाया। बीएसई के मुख्य बैचमार्क ने महज 31 कारोबारी सत्र में

राहुल के खिलाफ मानवानि केस में 7 जून को होगी सुनवाई
नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ 2018 में की गई कार्रवाई दिल्ली के मामले में कारोबार नेता राहुल गांधी के खिलाफ दायर बढ़ाया गया था। इसके बाद गृह मंत्री और रामलीला समझौतों के लिए बुकिंग पर रोक लगा दी है। यह रोक तब तक जारी रहेगी, जब तक कि प्राधिकरण नई भारक रामलीला प्रक्रिया (एसपीओ) या दिवसिर्विषयक बच्ची बनाना आयोगीपूर्ण तारीख तक सिर्विक्स शुरू की जाएगी। यह रोक करने का विदेश दिया गया है। उदाहरण का निर्देश डीटीए को वार्षिक व्यापार तैयार होने के बाद प्रचारित करने के कहाना है। उदाहरण में तो यह बार 76,000 का अंकड़ा छुआ और 76,009 का नया आ॒ल टाइम हाई बनाया। बीएसई के मुख्य बैचमार्क ने महज 31 कारोबारी सत्र में